International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 208-209

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 208-209
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-07-2020
Accepted: 26-09-2020

डॉ. मेधा कुमारी
एम. ए. पीएचडी। संस्कृत, आर.यू.एम स्कूल, नापावली, सीवान, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मेधा कुमारी
एम. ए. पीएचडी। संस्कृत, आर.यू.एम स्कूल, नापावली, सीवान, बिहार, भारत

काव्यषास्त्र में काव्यहेतु अन्तर्गत 'प्रतिभा' विचिन्तन

डॉ. मेधा कुमारी

प्रस्तावना
काव्यशास्त्र में काव्यहेतु के अन्तर्गत 'प्रतिभा' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वामन काव्यालङ्कार सूत्र में प्रतिभा को कवित्व का मूल बीज मानते हैं।

वामन का सिद्धान्त :
यह प्रतिभा पूर्वजन्म से चला आता हुआ ऐसा विशेष संस्कार होता है या कवि के जन्म के साथ उसे मिल जाता है और जिसके बिना काव्य उत्पन्न नहीं होता, और यदि उसके बिना काव्य रचना की भी जाती है तो उससे कवि हास्य का पात्र बन जाता।

''कवित्व–बींज प्रतिभानम्। कवित्वस्य बींज कवित्वबीजम्,
जन्मान्तरागतसंस्कारविशेषः कश्चित्। यस्माट्टते काव्यं न विषपद्यते।
निष्पन्नं वा हास्याऽऽयतनं स्यात्।।[1]

भट्टगोपाल प्रतिभा को कवित्व–बीज या एक प्रकार की सामग्री है, उसे एक विशेष संस्कार कि इसकी उत्पत्ति इसी बीज से हुई होगी, वैसे ही हम किसी कविता को देखकर समझ जाते हैं कि इसके मूल में कोई शक्ति रही होगी। यथा–

स्थानीयः संस्कारविशेषः कार्यकल्पनीया काचिद्वासनाशक्तिः।

महाकवि कालिदास अभिज्ञानशाकुन्तल के पञ्चम अङ्क के नवमे श्लोक में संस्कार भावस्थ पूर्वजन्म के अबोधपूर्व प्रणयादिसम्बन्धविशेष को ह्रदय से स्मरण करते है अर्थात् प्रतिभा जन्य संस्कारः ''पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतम्''[2] पूर्ववासना के गुणों से सम्बद्ध काव्यहेतु प्रतिभा को, वामन सम्मत जन्मान्तर–संस्कार विशेष प्रतिभा को, 'अनादिप्राक्तन संस्कार प्रतिमानमयाः अभिनवगुप्तसम्मत काव्य हेतु प्रतिभा को स्मरण करते है।

''रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुको भवति यत् संखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनमबोध पूर्व
भावास्थिराणि जननान्तर सौह्रदानि।।[3]

अर्थात् रमणीय वस्तुओं को देखकर और मधुर शब्दों को सुनकर सुखी प्राणी भी जो उत्कण्ठित हो जाता है, वह निश्चय ही संस्कार या वासना के रूप में बद्धमूल जन्मान्तरीय प्रणयादि सम्बन्धों को बिना जाने ही मन से स्मरण करता है।''
काव्यहेतु पर विचार करते हुए दण्डी ने तीन तत्त्वों का उपन्यास किया है– नैसर्गिकी, प्रतिभा, निर्मल शास्त्र ज्ञान तथा अभ्यास। इसीके समानान्तर इन्होंने यह भी विचार व्यक्त किया है कि व्यत्पत्ति (श्रुत) एवं अभ्यास (यत्न) के द्वारा प्रतिभा के अभाव में भी, काव्य निर्माण में कवि सफल हो सकता है।

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम्।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्याद कारनं काव्यसम्पदः।।[4]
सूर्य के देवीप्यमान रहते कैसे अन्धकार प्रकट होगा–
''तमस्तपति धर्माथौ कथमार्विभविष्यति।[5]''
अर्थात् काव्यहेतु में प्रतिभा का महत्वपूर्ण योगदान है।

राजशेखर ने अपनी 'काव्यमीमांसा' में प्रतिभा की व्याख्या की है और कहा है कि प्रतिभा वह शक्ति है– जो कवि के ह्रदय में शब्द–समूह, अर्थ–समूह उक्ति के ढ़ंग आदि ऐसी सारी सामग्रियाँ नयनपथ पर ला देती हैं जो कि प्रतिभाहीन व्यक्ति कभी सोच भी नहीं सकता। प्रतिभावान् व्यक्ति को अन्धे होने पर भी सभी पदार्थ प्रत्यक्ष जैसे दृग्गोचर होते हैं और इसीलिये वे उनका इस प्रकार वर्णन करने हैं मानो उन्होंने स्वयं खुली आँखों से देखा हो। सूरदास की रचना के सम्बन्ध में अनेक समीक्ष्यवादियों ने कहा है कि जिस सूक्ष्मता के साथ सूरदास ने कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है उसे देखकर यह विश्वास नहीं होता कि सूरदासजी जन्मान्ध थे। जिन बातों को सुनकर या पढ़कर हम कर सकते, उसे अपनी आन्तरिक शक्ति प्रतिभा है। राजशेखर ने इसका समर्थन करते हुए कहा है कि माधाविरूद्र और कुमारदास जन्मान्ध थे किन्तु उन्होने अपने काव्यों में सम्पूर्ण लौकिक पदार्थों का ऐसा विस्तृत और सुक्ष्म वर्णन किया है कि 'प्रतिभा ऐसा विशेष संस्कार है जो कवि को पिछले जन्म से ही अपने जीवात्मा के साथ प्रापत हो जाता है और जो दूसरे जन्म में कवित्व संस्कार मिलने पर सहसा उद्बुद्ध हो जाता है। अतः कविजन ऐसे विचित्र वर्णन करते हैं जहाँ साधारण मानव का बृद्धि पहुँच नहीं पाती।

दण्डी को प्रतिभा, शास्त्रज्ञान और अभ्यास काव्यहेतुत्व रूप में अभिप्रेत है। दण्डी के विचार से, केवल प्रतिभा से ही काव्य का स्फुरण नहीं होता, उसके साथ शास्त्रों का परिचय तथा काव्य–रचना का अभ्यास भी अपेक्षित है। इन्होंने भी अपने 'काव्यादर्श' में प्रतिभा को स्वाभाविक मानकर उसे पूर्वजन्म की वासना बताया है। अन्य आचार्यों के समान दण्डी ने प्रतिभाहीन कवि को मुँह छिपाकर घर बैठने का परामर्श नहीं दिया। महाकवि दण्डी ने आशा दिलाई है कि यदि शास्त्रों का अध्ययन किया जाय और सरस्वती की उपसना की जाय तो निश्चित ही सरस्वती की कृपा उस पर होगी ही। कहा गया है–

''नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रृतश्च बहुनिर्मलम्।
अनन्दश्चाभियोगश्च कारण काव्यसम्पद।।
''न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना
गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतम्
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता।
ध्रुव करोत्येव क्रमप्यनुग्रहम्।।'' इति।।

अवधान का महत्व सार्वजनीय है। आचार्य वायन ने दण्डी की ही बातों का विष्टवेषण किया है। आचार्य दण्डी ने प्रतिभा का नाम प्रतिमान दिया है। उसे कवित्व का बीज माना है। साथ ही साथ इस तथ्य पर भी जोड़ दिया है कि कवि को प्रतिभा के अतिरिक्त काव्यों का ज्ञान, काव्य–रचना के लिए अभ्यास और परिश्रम, काव्य की शिक्षा देनेवाले गुरू की सेवा, तााि अनेक शास्त्रों का अध्ययन की करना चाहिए।' इन सब के साथ–साथ उसने एकाग्रता (समाधि) को ही काव्य रचना हेतु माना है।

इस एकाग्रता का विवरण देते हुए उसने कहा कि इस अवधान या एकाग्रता की उत्पति देश और काल से होती है' अर्थात् गाड़ी में बैठे हुए कोलाहलपूर्ण वातावरण में कविता नहीं रची जाती। उसके लिए एकान्त हो और समय भी अनुकूल हो। ब्राह्म मुहुर्त में जिस समय सारी दृष्टि निद्रा भङ्ग की हुई होगी, उस नीरव–उद्बोधन वेला में कविता उद्वृद्ध हो सकती है। वामन ने प्रतिभा, काव्यज्ञान, काव्याचना में परिश्रम, गुरू की सेवा, शास्त्रज्ञान और एकाग्रता इन सबको काव्य की प्रेरणा माना है।

संदर्भ–संकेत :–

1. काव्यालङ्कार सूत्र
2. काव्यादर्श – 1/904
3. अ. था. ना. – 5/91
4. दण्डी काव्यादर्श – 1/103
5. कालिदास – अभिज्ञानशकुन्तल – 5/15